E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

शमशेर बहादुर सिंह के रचना संसार में युगबोध और शिल्प का समन्वय

त्रिष्टुप चंसौलिया

शोधार्थी, विषयः हिंदी ,जीवाजी विश्वविद्यालय,ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

Paper Rcevied date
05/05/2025
Paper date Publishing Date
10/05/2025
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.15384210

IMPACT FACTOR
5.924

ABSTRACT

युगबोध और शिल्प का गहरा अंतः संबंध हुआ करता है। इस बात से हम सभी परिचित हैं, कि युगबोध ही साहित्य और कलाओं विशेषकर कविता का उत्स होती है। साहित्य और युगबोध एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं, इसलिए युगबोध साहित्य का परिणाम भी होता है। कोई भी साहित्यिक रचना समाज में ही पल्लवित एवं पुष्पित होती है। समाज, संस्कृति और परिवेश से प्राप्त कच्चे माल की भाँति प्राप्त संपदा को एक सर्जक रचनाकार अपनी रचनात्मक प्रतिभा से आकृति प्रदान कर साहित्य के कोष की वृद्धि करने में अपना योगदान देता है। किसी रचनाकार की सृजन शक्ति, मानो जीवन का बीजभाव होती है, जो सृजनात्मकता की प्रक्रिया के कारण फलित होती है।

समकालीन कविता जीवन के यथार्थ का उद्घाटन करती है। इस युग की कविता की भाषा आम बोलचाल और जनजीवन की भाषा है। अपने समय की सचाई को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली भाषा में कहीं तल्खी और सपाट बयानी है, तो कहीं लोक मुहावरों की रसमयता भी मौजूद है। समकालीन कविता अपने कलात्मक सौंदर्य और शिल्प को कायम रखने में इस दृष्टि से कामयाब कही जा सकती है।

विचार और युगबोध, बिंब और प्रतिबिंब, अनुभव और अनुभूति लक्षण और व्यंजना के साथ मिलकर अपने युग, परिवेश और समय का चित्रांकन कर अभिव्यक्ति के विविध आयाम रचने में सक्षम है। युगबोधत्मक अनुभूति भी जब अभिव्यक्ति के धरातल पर उतरती है, तो भाषा की कारीगरी स्वयं कविता की अनुकूल शिल्पगढ़ कर चमत्कार उत्पन्न कर देती है। सन् 1950 से 1970 तक इन दो दशकों की कविता की यात्रा को साठोत्तरी कविता की यात्रा भी कह सकते हैं। इस दौर में कविता का स्वरूप कैसा रहा, उसका शिल्प कैसा रहा, इसका आंकलन समकालीन हिंदी कविता में युगबोध का स्वरूप के विश्लेषण के लिये आवश्यक प्रतीत होता है।

मुख्यबिन्दुः युगबोध, साहित्यिक, समाज, रचनात्मक, योगदान, सृजनात्मकता आदि ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

छायावादी काव्य में निराशा, पीड़ा और संत्रास की अभिव्यंजना छायावादी काव्य एवं छायावादोत्तर व्यक्तिपरक काव्य में पर्याप्त मात्रा में हुई है। महादेवी वर्मा की दुखवादी चेतना और भावुकता के अतिरिक्त बाहर निकलने की आवश्यकता कुछ इस तरह अनुभव की गई, जैसे साँस लेने के लिये ताजा प्राण वायु जरूरी होती है। कल्पना लोक से कवियों का ध्यान जब यथार्थ की ओर गया, तब नई कविता की जमीन तैयार हुई। समसामयिकता के दायित्वबोध, समय सापेक्ष एवं चिंतन, आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में युगीन प्रवृत्तियों के अनुसार सम्यक यथार्थबोध के संस्पर्श से कवियों के मानस में एक आक्रोशमयी, विद्रोही, संघर्षमयी,क्रांतिकारी परिवर्तन की पक्षधर एक नयी जन-युगबोध का जन्म हुआ।

जुझारू और स्वतंत्रता के बाद मोहभंग की स्थिति के कारण ऐसे अनेक बिन्दु उभर आये, जिनसे समकालीन कविता की युगबोध का स्वरूप तैयार हुआ। प्रतिदिन जीवन की दैनन्दिन समस्याओं से रूबरू आम इंसान व्यवस्था के वर्तमान ढाँचे को देखकर सतर्क और सचेत हुआ, तो इन परिस्थितियों से लड़ते हुए बारबार आम जीवन से जुड़े कवियों ने भी अपनी युगबोध को नई ऊर्जा से नया स्वरूप प्रदान किया है।

काव्य की नवीनता से ही, कयन पद्धति अथवा शिल्प-विधान की अभिनवता स्वतः ही आ जाती है। नई कविता में छायावादी सौंदर्य के पालने में से उतारकर मानव-भावना को बलपूर्वक उठाकर जीवन रूपी समुद्र की उत्ताल तरंगों में छोड़ दिया है, जहाँ वह साहस पूर्वक सुख दुख और आशा निराशा का घात प्रतिघातों में युग जीवन के आँधी तूफानों का सामना कर रही है, जहाँ कविता अपनी वैयक्तिक अंतर्वेदना से मुक्त होकर सामाजिक व्यथा के अनुभव ग्रहण कर परिपक्व हो रही है ।

नई कविता विश्व वर्चस्व से प्रेरणा ग्रहण करके तथा तीव्र - मंद गति-लय में अभिव्यक्ति कर युग-बोध के लिये एक नवीन भावभूमि का निर्माण कर रही है। नई कविता एवं वैविध्यमय जीवन के प्रति आत्मचेतस व्यक्ति की युगबोधत्मक प्रतिक्रिया है। नई कविता का स्वर ही विविध है, जिसमें कवियों की विभिन्न प्रकार की युगबोधऐं एवं विचारधाराऐं है।

समकालीन कविता के अंतर्गत एक ओर शैली, शिल्प और माध्यमों के प्रयोग होते रहे हैं, तो दूसरी ओर समाजोन्मुखता पर बल दिया जाता रहा है। नई कविता सही अर्थों में वह है, जिसमें इन दोनों ही तत्त्वों का स्वरूप एवं संतुलित समन्वय है। कविता कहीं लयात्मक मुक्तछंद में है तो कहीं

प्रगतिशील होते हुए भी भावप्रधान अथवा भावात्मक है। कविता कभी सरल तो कभी जटिल और कभी-कभी उक्ति समान लगती हैं, कभी वह भग्नता एवं विषाद को व्यक्त करती है, तो कभी आस्था और निष्ठा को युगबोध भी देती है। प्रयोगधर्मी कविता कभी बौद्धिक व चेतना, तो कभी लोकरूचि में अनुकूल आस्वाद का अनुभव देती है।

शमशेर बहादुर सिंह ने 'हमारी जमीन' नामक कविता में विभिन्न युगबोधओ को व्यक्त किया है, जिससे मानव जीवन उत्थानयुक्त बनता है।

हमारी जमीन जो सिर्फ अपने चाँद

से पास है, सूरज से कितनी दूर है

यद्‌यपि उससे बँधी हुई और ग्रहों से भी

एक तरह से बँधी-सी ही हुई मगर सदैव

'नई कविता प्रयोगवाद से मार्क्सवाद के घरातल की ओर विस्तार पाकर कभी व्यंग्य प्रधान बौद्धिक कविता का स्वरूप ग्रहण करती है, तो कभी लोक साहित्य से प्रभावित होकर अंतर चेतना के लोकरंगों में रंगी प्रतीत होती है। समकालीन कविता के आविर्भाव में सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों का बड़ा हाथ रहा है। जीवन की विषमता, घुटन, संत्रास, कुंठा, वेदना, पीड़ा, संघर्ष, अन्याय, समय का चित्र, शोषण और आम इंसान के दर्द का लेखा-जोखा नई कविता की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

सन् 1962 में भारत-चीन युद्ध के बाद जनमानस में उठे एक नये ज्वर के परिणाम स्वरूप कवियों का मानस भी प्रभावित हुआ और एक नये तेवर और मिजाज की कविता सामने आई है। इस कविता में सौंदर्यानुभूति और वस्तुतत्त्व दोनों ही स्तरों पर परिवर्तन देखा गया है। एक नया शिल्प इस नई युगबोध के साथ जोड़ा गया।

मुक्तिबोध ने टिप्पणी की है कि नया कवि केवल बाह्य के प्रति युगबोधघात करके, युगबोधत्मक प्रतिक्रिया करके उस शब्दों में बाँध देता है। यह इसलिये कि कवि कलाकार ययार्थ-बोध के प्रथम स्तर पर युगबोधत्मक आंकलन और युगबोधत्मक प्रतिक्रिया के स्तर पर ही रहना चाहते हैं। वे वास्तविक जीवन विश्लेषण को उसकी पूरी गहराई से आत्मसात करना नहीं चाहते। यही कारण है

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

कि जीवन के विस्तार चित्रण हमें नई कविता में कम दिखाई देते हैं क्योंकि उसमें केवल विशिष्ट का चित्रण ही नहीं, वरन् परस्पर संबंधित विशिष्टों का चित्रण और सामान्यीकरण इन दोनों की आवश्यकता है।

मुक्तिबोध ने नई कविता के संबंध में जो विचार किये उनका एक निष्कर्ष यह है, कि कलाकृति कोई भी हो, उसकी व्यक्त रचना प्रक्रिया में वास्तविक वृहद अंश हमें सजग और आत्मलीन क्षण बहुत कम होते हैं। प्रवृत्तियों के एक ज्ञानानुभव आदि अकाव्यात्मक अंशों से घिरा रहता है। ऐसी स्थिति में युगबोध के व्यापक विस्तार के निमित्त रचनाकार के लिये यह आवश्यक हो जाता है, कि वह सौंदर्यानुभूति के विशिष्ट क्षण द्वारा उपस्थिति अन्र्ततत्त्वों के क्षेत्रों का अतिक्रमण करे, और इस प्रकार अपनी आत्मकेन्द्रित अथवा अनुभूतियाँ महत्वपूर्ण होती है। अतः उनकी अभिव्यक्ति भी महत्त्वपूर्ण है। अपने परिवेश में यर्थाथबोध का साक्षात्कार करने के लिये हम विवश होते हैं। उसकी अभिव्यंजना के निमित्त हमें अपने अनुभवबोध में विश्लेषणात्मकता लम्बी होती है। इस विश्लेषणात्मकता की कमी के कारण नई कविता धीरे-धीरे और अवसाद की ओर बढ़ने लगी । यहाँ वस्तु की अपेक्षा शिल्प पर अधिक जोर था। शिल्प में भी उन्होंने भाषा को नया संस्कार दिया था। शब्द की आत्मा में छिपे अर्थ को पहचानने की कोशिश की थी।

कवि ने 'रोम सागर के बीचोबीच' नामक कविता में आधुनिक भावबोध को व्यक्त किया है।

रोम सागर के बीचो बीच

आधुनिक माल्टा के सुसंस्कृत टापू

में उत्तर भारत का हृदय और मस्तिष्क

कोई टटोल रहा है।

साठोत्तरी कविता आंदोलनों के दौर में कुण्ठा, संत्रास एवं क्लेष के साथ आधुनिक भावबोध की युगबोध का नगरीकरण हुआ । यथार्थता की अनुभूति हुई और निषेधात्मकता का स्वर सुनाई दिया। साठोत्तर वर्षों में देश की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति में रचनाकार के लिये रचना कर्म को

महिमामंडित कर्म नहीं रहने दिया। अतः सभी कवि अपने अस्तितत्व की रक्षा हेतु सावधान हो गये। इससे रचनाकार के कर्म होने की भावना को ठेस पहुँची ।

सातवें दशक की कविता में सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ राजनीतिक क्षितिज पर हुए बदलाव ने भी जीवन मूल्यों तथा उससे संबद्ध स्थितियों को निरूपित करने की प्रेरणा प्रदान की थी। परिणामस्वरूप इस जो कविता में अनेक ऐसी प्रवृत्तियाँ उभरी मोहभंग, स्वप्नभंग, सपाट बयानी, आक्रोश, विद्रोह आंतरिक संघर्ष, निर्मम वास्तविकताओं की क्रूर व्यंजना, अनोखेपन अर्थहीनता, भूख, अकुलाहट, बैचेनी, असंतोष और अजनबियत के भावों से जुड़ी हुई है। युवा कविता में अपने परिवेश को यथार्थ शिल्प में प्रस्तुत कर दिया गया है। सातवें दशक की कविता में जो युगबोध व्यक्त हुई है, उसमें यह भी उल्लेखनीय संदर्भ है, कि रचनाकार की सौंदर्य दृष्टि में परिवर्तन आया है। वर्तमान की असंगतियों एवं स्थापित व्यवस्था के प्रति असहमति एवं विरोध स्पष्ट परिलक्षित होता है। प्रतिबद्ध

कविता, सहज कविता, सांप्रतिक कविता एवं दलित कविता अनेक नामों से व्यवस्था विरोध में कवियों के स्वर सुनाई देते हैं।

मुक्तिबोध, शमशेर, त्रिलोचन, वीरेन्द्र कुमार जैन, अज्ञेय, केदारनाथ अग्रवाल, सर्वेश्वर, रघुवीर सहाय, श्रीकांत वर्मा एवं दुष्यंत कुमार आदि के रचनाकर्म में वस्तु और शिल्प का सुन्दर समन्वय मिलता है। युगबोध के धरातल पर अपनी चित्रात्मक शैली, बिंब- प्रतिबिंब, प्रतीक और शैली, भाषा और व्यंजना की दृष्टि से शमशेर बहादुर सिंह एक समर्थ कवि होने के साथ-साथ एक महान शिल्पी भी हैं।

शमशेर अत्यंत जटिल काव्य-युगबोध और सूक्ष्म शिल्प संसार वाले श्रेष्ठ विशिष्ट कवि हैं। भाषा, युगबोध एवं संगीत सभी दृष्टियों से उनका रचना संसार अपूर्व है। उनका युगबोध गहरे अंतर्विरोधों से युक्त है। शायद इसी कारण उनके कृतित्त्व के समग्र मूल्यांकन के प्रयास कम ही हुए। जबकि वे चर्चा के केन्द्र में लगातार रहे हैं।

शमशेर की काव्य-युगबोध, उनके बिंबों का रचना संसार, उनकी भाषा, छंद, लय, गीति काव्य एवं स्वरूप आदि का विवेचन करते हुए अनेक काव्य आन्दोलनों तथा उनके समकालीन रचना धर्मियों के संदर्भ में उनके साहित्य का मूल्यांकन भी किया गया है। उनके काव्य वैशिष्ट्य, युगबोध और शिल्प पर अभी उनके

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मूल्यांकन की दृष्टि से पर्याप्त विश्लेषण की शेष संभावनाएँ अब भी श्रेष्ठ हैं। शमशेर की काव्य के युगबोधत्मक तथा शिल्पगत पक्षों पर उनके काव्य को उनकी विचारधारा तथा कलात्मक रुझानों की रोशनी में प्रस्तुत करने के उद्देश्य को लेकर ही उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व के नये आयामों का उद्घाटन करते हुए, उनके साहित्य में अंतर्निहित युगबोध की पड़ताल की गई है।

शमशेर की कविता में प्रेम और दुख की तीव्रता का स्वर है। उनकी कविता संसार के चक्के पर है। कवि ने प्रेम, वेदना और दुख को व्यक्त किया है।

हृदय गूँगा नहीं। फेफड़े दोनों काम करते संग-संग, समान रूप ।

शमशेर की कविता में युगबोध के विविध आयाम है। उनकी युगबोध के केन्द्र में आदमी है। वे जीवन के यथार्थ और शोषित पीड़ित मानवता के संघर्षो को अपनी कविता में उठाते रहे हैं। उनके स्वरों में जीवन की मूलभूत समस्याओं का चित्रण है। वे जीवन और जगत् के संघर्ष को चित्रित करने वाले अनूठे चितेरे हैं। मानवता के मूल्यों की रक्षा के ध्येय से रची गई उनकी कविताएँ विश्व प्रेम का संदेश हैं। प्रकृति और पर्यावरण के प्रति वे सदा जागरूक रहे हैं।

आधुनिक युग के कवियों में वे युगबोध के सशक्त हस्ताक्षर हैं। उनकी काव्य युगबोध के और भी कई इंद्रधनुषी पक्ष हैं। वे न केवल एक कवि, शायर या विचारक हैं, बल्कि वे एक उत्कृष्ट स्तर के चित्रकार भी हैं। पिकासो से प्रभावित चित्र - शैली भी उनकी काव्य-युगबोध का एक अन्य आयाम हैं।

"जीवन की तुला में प्राणों का संयमन, सहजतम एक अद्भुत

व्यापार सरलता का हमारी ही तरह, कैसा दुरूस्तम स्पष्टतम।"

शमशेर की कविता हमारे वक्त की जतन सहेजकर रखा गयी ओढ़नी है। वह आदमीनामा जो व्यथा और हर्ष के साथ अनेक जीवन छवियों को लेकर अनेक रंगों में लिखा गया है। शमशेर जीवन की सच्चाई के साथ जमीन से जुड़े कवि हैं।

इसीलिये वे कवियों के कवित्व होकर भी अपनी अंतरात्मा से एक जनजीवन के जनवादी कवि हैं। शमशेर मूलतः सौंदर्यबोध और रोमानियत के कवि हैं, लेकिन उनकी युगबोध का फलक विस्तृत और बहु आयामी है। उनके काव्य में छायावाद, प्रयोगवाद और प्रगतिवाद तीनों विचारधाराओं के कथ्य और शिल्प का संगम

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मिलता है। उनमें निराला का वैविध्य और मुक्तिबोध की बिंबधर्मिता का अद्भुत सम्मिश्रण मिलता है। वे किसी सीमा रेखा में बंधे नहीं हैं। यही कारण है कि शमशेर के काव्य में दुनिया समाज एवं सांसारिक, भौतिक एवं सांस्कृतिक जगत् के अनेक ययार्थपरक चित्र दृष्टिगत होते हैं। मार्क्सवाद से प्रभावित होने के कारण वे सर्वहारा के प्रति अधिक युगबोधशील रहे हैं। श्रमिकों के शोषण तथा उन पर हो रहे अत्याचारों को वे सहन नहीं कर पाते हैं। उनके दुख और बेबसी से वे बेचैन हो उठते हैं। सन् 1944 में ग्वालियर रियासत द्वारा मजदूरों पर किये गये अन्याय से द्रवित होकर लिखी उनकी यह कविता द्रष्टव्य है-

गरीब के हृदय

टंगे हुए कि रोटियों के लिये हुए

निशान जो रहे के चल रहा !

लहू भरे ग्वालियर के बाजार में जुलूस ।

यहाँ शमशेर गरीब मजदूरों के पक्षधर के रूप में आंदोलनरत है। सन् 1962 में जब चीन, हिंदी चीनी भाई-भाई कहकर भारत की पीठ में छुरा भोंकता है, तो वे मार्क्सवाद के प्रणेताओं को ललकारते हुए कहते है- मार्क्स को जला दो। लेनिन को उड़ा दो, माओ, क्यून-ल्यून को प्रशान्त महासागर में डुबो दो। देश में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं साम्प्रदायिकता से वे सदा दुखी रहे । कर्त्तव्यमूल वाले नेताओं से वे कहते हैं कि, जो धर्मों के अखाड़े हैं, उन्हें लड़वा दिया जाए। जरूरत क्या है

कि हिंदुस्तान पर हमला किया जाए। सामाजिक विघटन पर वे कबीर की तरह प्रहार करते रहे हैं।

संदर्भ सूची

1. सिंह शमशेर बहादुर, इतने पास अपने हमारी जमीन, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2017, पृ. 21
2. सिंह शमशेर बहादुर, इतने पास अपने रोम सागर के बीचोबीच, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2017, पृ. 30
3. सिंह शमशेर बहादुर, इतने पास अपने, संसार के चक्के पर हैं, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2017, पृ. 37

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

4. सिंह शमशेर बहादुर, इतने पास अपने पिकासोई कला, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2017, पृ. 23